



ध्येय IAS®

most trusted since 2003

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

प्राचीन भारत का इतिहास

द्वारा

विजय वेद सर

FACE TO FACE CENTRES

MUKHERJEE NAGAR (Head Office): A-12/13 ANSAL BUILDING, DR. MUKHERJEE NAGAR, DELHI - 110009, 9205274741/ 42/ 43/ 44
RAJENDRA NAGAR: 25B, SECOND FLOOR, PUSA ROAD NEW DELHI - 9205274743, 9205274745
LAKSHMI NAGAR: 1/53, 3RD FLOOR, LALITA PARK, LAXMI NAGAR, DELHI-92, 011-43012556, (+91)- 9311969232
RESIDENTIAL ACADEMY: 28/1A, KNOWLEDGE PARK III, GREATER NOIDA, UTTAR PRADESH - 201306, PHONE: 092053 36037/38/39
PRAYAGRAJ: IIND & IIIRD FLOOR, SHRI RAM TOWER, 17C, SARDAR PATEL MARG, CIVIL LINES, ALLAHABAD PH.: 0532-2260189, 08853467068
LUCKNOW- ALIGANJ CENTRE: A-12, SECTOR-J, ALIGANJ, LUCKNOW PH.: 0522-4025825, 09506256789
LUCKNOW- GOMTI NAGAR CENTRE: CP-1, JEEWAN SHOPING COMPLEX, VIRAM KHAND-5, NEAR HUSARIYA CHAURAH, GOMTI NAGAR, LUCKNOW -227106 PHONE: +91 7234000501, 7234000502
BHUBANESWAR: OEU TOWER, THIRD FLOOR, KIIT ROAD, PATIA, BHUBANESWAR, ODISHA 751024, PH.: +91 9818244644, 7656949029

LIVE STREAMING CENTRES

Ahmedabad 9879113469/8000162499
 Aligarh 9837877879
 Azamgarh 7617077051
 Bahraich 7275758422
 Bareilly 9917500098
 Chandhigarh 8146199399/9050888338
 Faridabad 9711394350
 Gorakhpur 7080847474
 Gwalior 9893481642
 Haldwani 8077728957/7060172525
 Hisar 9996887708
 Jabalpur 8982082023

Jodhpur 9529989199/9928965998
 Jalandhar 9888777887
 Kanpur 7275613962
 Kurukshetra 8950728524
 Lucknow Alambagh 7518373333
 Ludhiana 9876218943/9888178344
 Moradabad 9927622221
 Patiala 9041030070
 Patna 9334100961
 Rewa 9926207755
 Varanasi 7408098888

“राजनीतिक प्रशासनिक”

मौर्योत्तर कालीन राजनीतिक प्रशासनिक विशेषताएँ निम्न थी -

निरंकुश राजतंत्र पर आधारित राजनीति :- मौर्योत्तर कालीन अधिकांश राज्य निरंकुश राज्य थे जहाँ राज्यतंत्रात्मक ढाँचे में प्रशासन चलाया जाता था। इसके तहत शासक एक निश्चित क्षेत्र पर केन्द्रीय मंत्रियों एवं अधिकारियों प्रांतीय एवं स्थानीय अधिकारियों आदि के माध्यम से शासन चलाता था।

शासन में संयुक्त प्रणाली के साक्ष्य :- इसकाल में सिद्धान्ततः प्रशासनिक रूप से शासक सर्वोच्च थे लेकिन उनके द्वारा शासन में राज परिवार के व्यक्तियों जैसे युवराजों महिलाओं तथा अधिनस्तों तथा सामन्तों को शासन में भागीदार बनाते थे। कुषाणों में अनेक सामन्तों सातवाहनों में रानीयों तथा शुंगों में युवराजों के शासन में भागीदारी के साक्ष्य मिलते हैं।

राजत्व में देवत्व का आरोपण :- इसकाल के पूर्व के शासक राजत्व में देवत्व का आरोपण करने में विवश नहीं करते थे लेकिन इस काल में यह प्रवृत्ति दिखाई देती है। कुषाणों चीनियों की भाँति देवपुत्र की उपाधी ग्रहण की इसी प्रकार सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी ने अपने अभिलेखों में अपनी तुलना राम अर्जुन तथा भीम से किया है।

राजनीति में सामंती लक्षण :- मौर्योत्तर कालीन राजनीति एवं प्रशासन में कहीं सामंती लक्षण भी विद्वान थे जहाँ एवं कुषाणों में महाराजाधिराज, राजाधिराज, घाटानुषाही जैसी उपाधियाँ ग्रहण की थीं। इससे ऐसा लगता है कि उनके अधिन अनेक सामन्त थे। इसी काल में सातवाहनों द्वारा पहली बार भूमि अनुदान दिया गया। अनुदान के साथ-साथ भूमि प्राप्त कर्ता को राजस्व वसूली एवं प्रशासनिक अधिकार भी प्रदान किये गये। इससे सुदूर क्षेत्रों में सामंतीकरण को बढ़ावा मिला।

गणराज्यों की उपस्थिति :- मौर्योत्तर काल में राजतंत्रों के साथ साथ वर्तमान पंजाब, मध्य प्रदेश, तथा राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में मासव, पौरव, शिवि, नाग, अर्जुनायन आदि अनेक गणराज्य भी थे। यहाँ गणतंत्रिक पद्धति द्वारा शासन चलाया जाता था। ये गणराज्य अपने क्षेत्रों में संपूर्ण सम्पन्नता रखते थे इनके गरा जारी किये गए अनेक सिक्के प्राप्त हुए हैं।

मौर्योत्तर कालीन समाज

मौर्योत्तर पूर्व समाज की
निरंतरता बनी रही

समाज में कुछ नये प्रवृत्तियों
का उदय (नये परिवर्तन विशेषतः)

1. समाज चार वर्गों तथा विभिन्न जातियों में बंटा था जैसा की पहले था
2. दास प्रथा विद्यमान थी (मनुस्मृति में चर्चा)
3. शूद्रों की स्थिति दयनीय थी महिलाओं की दयनीय स्थिति
4. वर्णसंकरों की विमानता बृद्धि हुई - पुद्गलान - 11
मनुस्मृति - 61
5. विदेशियों का आगमन एवं भारतीय समाज से उनका जुड़ाव
6. समाज में ब्रम्हणों की श्रेष्ठता स्थापित हुई (धर्म + राजनीति दोनों में)
7. वैश्यों एवं शूद्रों का उत्थान
8. नयी जातियों का उद्भवन (धर्म - राजबलक्य स्मृति में कायस्थों की चर्चा पहली बार)
9. कविलाइयों का वर्ण व्यवस्था में समामेलन किया जाना
10. वर्ण व्यवस्था में तनाव का भाव एवं कलियुग के संकट की संकेलपना का आगमन

मौर्योत्तर कालीन समाज की विशेषताएँ पिछले कालों की परम्परागत समाजिक विशेषताओं जैसी ही थी लेकिन इस काल में कुछ नयी समाजिक विशेषताएँ स्थापित हुई तथा समाज में नये परिवर्तन हुए जो निम्न हैं।

सम्राज में वृद्धि की श्रेष्ठता मजबूत होना -: इसकाल में वृद्धि को धर्म के साथ-साथ राजनीति में भी श्रेष्ठता प्राप्त हुई। पूर्व में जहाँ वृद्धि केवल दान दक्षिणा यज्ञ पूजा आदि से जुड़े होते थे अब वे शासक के इसकाल के अनेक राजवंश जैसे गुप्त कर्ष सातवाहन एवं वकाटक वृद्धि के भार शिव जैसे गणराज्य भी वृद्धि थे इसकाल में वृद्धि की विधाओं जैसे यज्ञ एवं दान दक्षिणा कामह्व पूजा स्थापित हुआ।

वैश्य तथा शूद्रों का उत्थान -: इसकाल में कृषि व्यापार तथा वाणिज्य में काफी उन्नति हुई। कृषि कर्म से जुड़ने के कारण शूद्रों का उत्थान हुआ इसी प्रकार वैश्यों का भी उत्थान हुआ।

वर्णसंकरों की संख्या में वृद्धि -: इसकाल में अन्तरवर्णिय विवाहों की संख्या में वृद्धि हुई जिससे वर्ण संकरों की संख्या में वृद्धि हुई। बृहदकाल में जहाँ ग्यारह (11) वर्णसंकरों की संख्या मिलती है वही मनुस्मृति इसकाल में इसकी संख्या 61 बताती है।

महिलाओं की स्थिति में गिरावट -: इसकाल में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आयी। मनुजैसे धर्मशास्त्रकारों ने महिलाओं के लिए वर्ण नियम को और कठोर बना दिया। मनु ने महिलाओं को ताड़न पुरुषों के अधिन घोषित किया। बाल विवाह को प्रोत्साहित किया गया। सम्पत्ति के अधिकार से महिलाओं को वंचित किया गया।

विदेशियों का आगमन एवं भारतीय सम्राज में उनका समावेशन - इसकाल में यूनानी शक कुषाण पहलव आदि अनेक विदेशियों का भारत आगमन हुआ। इन्होंने भारत में अनेक क्षेत्रों में राज्य स्थापित कर लिया। प्रारम्भ में इससे डरी बनाते हुए पराधीन के रूप में उनकी निन्दा की गई लेकिन जब उन्होंने

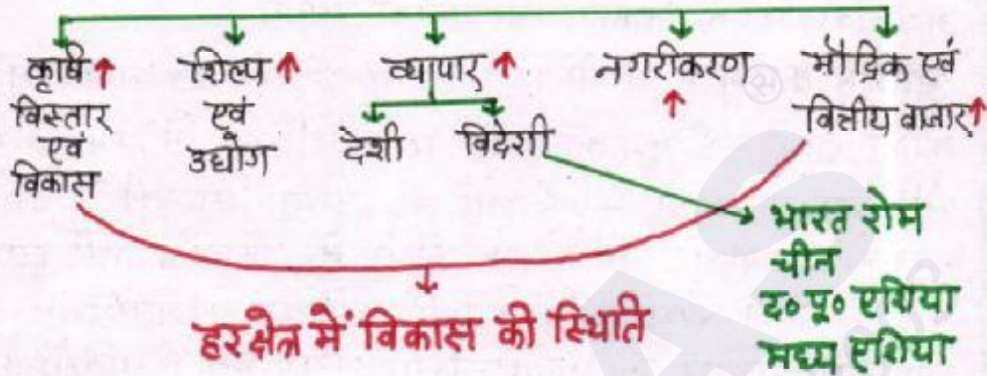
भारतीय समाज एवं धर्म को लेकर उदारता दिखलाई तब उन्हें वर्ण व्यवस्था में शामिल करा लिया गया मनु ने ब्राह्मण्य यज्ञ के माध्यम से विदेशियों को पतित क्षत्रिय घोषित करते हुए भारतीय समाज में शामिल किया।

जनजातियों का ब्रम्हणीय समाज में समावेशन :- इस काल में अनेक कविलों जनजातियों का वर्ण व्यवस्था में समावेशन हुआ इस काल में ब्रम्हणों को खुदरवती क्षत्री में धर्मी गढ़वान प्राप्त हुए ब्रम्हण पुजारियों द्वारा कविलों को कृषि कर्म से जोड़ा गया तथा उनको वर्ण व्यवस्था में स्थान दिया गया इसके धार्मिक रीति-रिवाजों को हिंदू धर्म में उभान दिया गया।

वर्ण व्यवस्था में तनाव एवं कलियुग के संकट की अवधारणा का उदय :- इस काल में भारत में विदेशियों के आगमन से वर्ण व्यवस्था में उन्हें कहा शखा जाय इस बात पर मतभेद उभरे इस काल में शूद्र तथा वैश्यो द्वारा अनेक स्थानों पर कर देने तथा वैंगारी करने से भना किया गया वर्ण व्यवस्था के जो सैद्धान्तिक नियम बने थे जिससे उनकी अवहेलना हुई सामाजिक तनाव उत्पन्न हुए वर्ण व्यवस्था के परम्परागत नियमों की दुरुता हुआ देखकर इस काल में मनु जैसे व्यवस्थाकारों ने इसे कलियुग के संकट का नाम दिया पहली बार वम्भन धर्म में चार युग (सतयुग त्रेता यापर कलियुग) की प्रकल्पना स्थापित हुई।

प्राचीन भारत मौर्योत्तर कालीन अर्थव्यवस्था

आर्थिक समृद्धि का काल



मौर्योत्तर काल आर्थिक विकास एवं समृद्धि का काल था इस काल में भारत के कृषि व्यापार वाणिज्य नगरीकरण आदि सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

आर्थिक प्रगति एवं विकास में आये उछाल के कारण

आर्थिक उछाल के पीछे अनेक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका थी जैसे -

राजनीतिक कारण - इसकाल में देशी तथा विदेशी अनेक राज्यों का उद्भव हुआ सभी राज्यों द्वारा व्यापार एवं आर्थिक विकास के अनुकूल अनेक प्रकार से सहायता दी गयी इस काल में श्रेणियों को काफी स्वायत्तता प्राप्त थी राज्य द्वारा चुंगी एवं व्याज दरों को काफी उदार बनाया गया लगभग सभी राज्यों ने अनेक प्रकार के सिक्के जारी किए सड़कों का विकास कराया कानून व्यवस्था को मजबूत बनाया गया इन सभी स्थितियों के कारण अर्थव्यवस्था के विकास को काफी बढ़ावा मिला।

सामाजिक कारण - किसी भी समाज में जब मैलजोल की स्थिति हो शान्ति हो समाज आपसी सहयोग में विश्वास करता हो तो यह स्थिति आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देती है।

इसकाल में विदेशियों का भारतीय समाज से जुगबुझा इसीप्रकार विभिन्न जातियों एवं वर्गों के बीच सामाजिक सहयोग कायम हुए अतः इस आत्मसातीकरण के कारण अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा मिला।

आर्थिक कारण - मौर्योत्तर काल में शिल्पो की संख्या में काफी वृद्धि हुई बुद्धकाल में 18 मौर्यकाल में 24 जबकि मौर्योत्तर काल में 75 शिल्पों की सूचना मिलती है इस काल में पहलीबार सोने एवं शिरी के सिक्के जारी हुए शासकों द्वारा रोम दक्षिणी पूर्वी एशिया मध्यएशिया आदि से व्यापार को बढ़ावा दिया गया इन स्थितियों के कारण भी आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा मिला

अर्थव्यवस्था का क्षेत्रीय अध्ययन

कृषि में काफी विकास

- विभिन्न फसलों की खेती में वृद्धि
 - ↳ धान जौ गेहूँ कपास गन्ना मसाले आदि
- कृषि का विस्तार
- साम्राज्य में कृषक कुटुम्बी जीवन एवं कृषि कर्म को बढ़ावा देने की बकालत की गयी

कारण

- 1- सिंचाई के साधनों का विस्तार
 - ↳ कुआ जलशाय तालाब झील का निर्माण
 - राज्य द्वारा आम लोगों द्वारा
- 2- भूमि अनुदान एवं कृषि का विकास
 - ↳ सातवाहन
 - बौद्ध → को पहलीबार भूमि अनुदान दिया गया
 - ब्राह्मण
 - ↳ कुषाण → अश्वनीविदान (स्थायी वंशानुगत दान)
- 3- भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व को विशेष मान्यता दिया जाना
 - ↳ मनु → धिरण उसकी है जो पहले तीर-चलाये
 - भूमि उसकी है जो पहले उसे जोते बोये
 - व्यक्तिगत स्तर पर कृषि कार्य के बढ़ावा मिला
- 4- लौहे के उपकरणों का कृषि में अधिक से अधिक प्रयोग किया जाना
 - तक्षशिला पेशावर मथुरा करीमनगर आदि स्थलों से हथियारों के लौहे के हल कुदाल कुठार ढसियों अधिकतम में प्राप्त हुए हैं।

भूमि स्वामित्व (Land Ownership)

मौर्योत्तर काल / प्राचीन भारत

बहस

West Historian thinker

- प्राचीन भारत में भूमि पर व्यक्तिगत (Private) अधिकार नहीं था
- भूमि का मालिक राजा प्रजा से अधिककर वसूलते थे एवं शोषण करते थे

Neutral Observation

- भारत में तीन प्रकार के भू-स्वामित्व थे
- ① व्यक्तिगत भू-स्वामित्व - भूमि गुप्त अभिलेख - राज्य द्वारा भूमि अनुदान दिये जाने के लिए भूमि खरीद की चर्चा
- ② राजकीय स्वामित्व (सीता भूमि) - सैद्धांतिक तौर पर राजा को भूमि पर आंतिम अधिकार प्राप्त था विभिन्न खाली एवं परती भूमि पर राज्य का अधिकार होता था यही कारण है कि राज्य द्वारा भूमि अनुदान किया गया
- ③ सामुदायिक स्वामित्व - जलराश - चारागाह वनसम्पदा वन क्षेत्र आदि पर ग्रामीण समुदाय का सामुदायिक अधिकार होता था

स्वातवाहन गुप्त गुप्तोत्तर

ई० - पल्लव + चोल सम्राट

शिल्प वाणिज्य उद्योग

→ अनेक प्रकार के वस्तुओं का उत्पादन होता था पिछले कालों की अपेक्षा इस काल में उद्योगों एवं व्यवसायों की संख्या में वृद्धि हुई बुद्धकाल में 18, मौर्यकाल 24, मौर्योत्तर 45 मिलिन्दपन्थे

→ धातु का व्यवसाय सोना चांदी तांबा लौह (सेमी स्टील का उत्पादन जिसपर जंग नहीं लगता था) बेरीलस - भारत निर्मित ऐसे लोहे की तलबारी की चर्चा मिलती है जिनका आफ्रिका में निर्मित होता था

वस्त्र उद्योग काफी अच्छी स्थिति में दिखता है (सूती + रेशमी) अनेक किंद्र विशिष्ट वस्तु के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध थे

- बनारस (रेशमी वस्त्र)
- मथुरा (शाटक सूती)
- अरिकामेडू (सूती)
- प्रतिष्ठान (सूती)

अन्य व्यवसाय - गाँविक बड़ी कुम्भकार आदि की चर्चा मिलती है।

हाँथी दात की बनी वस्तुएँ भारतीय काफी बेहतरीन बनाते थे जिनकी दुनिया भर में माँग थी

श्रेणी संगठन (Guilds)

निगमित / संगठित आर्थिक प्रणाली जिसमें उत्पादन व्यापार लब्ध लेन देन माल दुलाई आदि कार्य संगठित समूहों द्वारा किया जाता था



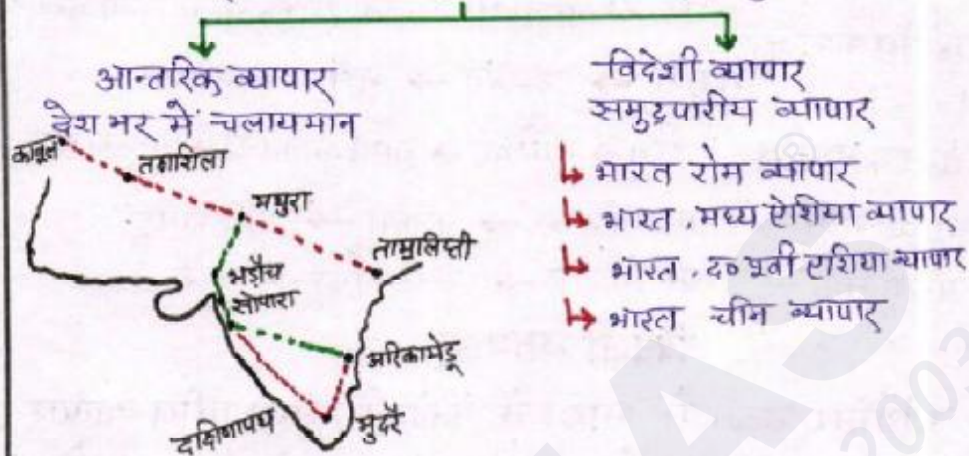
श्रेणियों के कार्य एवं भूमिका

प्राचीन भारत श्रेणियों द्वारा अनेक भूमिकाएँ निभाई जाती थी इनके कार्य काफी व्यापक थे

- | | | |
|--|--|--|
| <p>राजनीतिक</p> <ul style="list-style-type: none"> • श्रेणी अपनी सुरक्षा का बन्दोबस्त • राज्य द्वारा स्वायत्तता प्राप्त करती जाती होता था | <p>आर्थिक</p> <ul style="list-style-type: none"> • उत्पादन • माल दुलाई • वित्तिय लेन देन • बिक्री | <p>सामाजिक सांस्कृतिक</p> <ul style="list-style-type: none"> • कला को विकास एवं संरक्षण भरत साप्ती कस्तुषो के कई भाग श्रेणियों के दान द्वारा बनाये गये • गुप्तकालीन अभिलेख 'मन्दसौर' इसमें [192] द्वारा मंदिर बनाये जाने की सूचना • बौद्ध धर्म को दान दिये जाने की सूचना |
|--|--|--|

मौर्योत्तर कालीन व्यापार

व्यापार में काफी समृद्धि आयी विकास हुआ



व्यापार के विकास का कारण

- राजनीतिक कारण
- आर्थिक कारण (क्षेत्री की भूमिका)
- भौगोलिक कारण (मानसून)
- सामाजिक कारण शान्ति स्थायित्व, आत्मसातीकरण

मौर्योत्तर काल में व्यापार का अभूतपूर्व विकास हुआ यह विकास आन्तरिक तथा बाह्य दोनों में दिखाई देता है व्यापार के विकास की यह सूचना मिलिन्दपन्थी, जातक कथाओं, संगम साहित्य यूनानी रोमन लेखकों (प्लीन, स्ट्रैबो, पेरिप्लस आर्ब) के विवरण सिक्कों अंगिलेखों आदि से प्राप्त होती है।

आन्तरिक व्यापार

- इसकाल में देश के विभिन्न भाग में अनेक उत्पादन केंद्र काफी सक्रिय थे जिसमें बनारस मथुरा तथा तक्षशिला प्रतिष्ठान भरिकामेडू मदुरै आदि मुख्य हैं विभिन्न नगरों अनेक वस्तुओं के उत्पादन की चर्चा मिलती है जिसमें हॉपी दात की बनी वस्तुएं मोती रत्न आभूषण नमक तेल रस्सी एवं रेशमी वस्त्र आदि मुख्य थे -

- इसकाल में विभिन्न नगरों एवं बाजारों को जोड़ने वाले अनेक व्यापारिक मार्ग सक्रिय थे जिनके द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर व्यापार में जुड़ते थे ये मार्ग निम्न हैं

- प्रथम मार्ग → ताम्रलिप्ती → राजगीर → पावलीपुत्र → मधुरा →
→ तक्षशिला → काबूल (उत्तरापथ मार्ग जो समस्त
भारत को जोड़ता था अन्ततः शिल्क रूट से मिला जाता था)
- द्वितीय मार्ग → मधुरा → उज्जैन → भड़ौच → सोपारा
- तृतीय मार्ग → भड़ौच → नासिक → नागार्जुनकोण्डा → अरिकामेडू
- चतुर्थ मार्ग → मालाबार तट → अजन्ता → अरिकामेडू
- पंचम मार्ग → ताम्रलिप्ती → अरिकामेडू → भदुरै

विदेशी व्यापार

मौर्योत्तर काल में भारत के विदेशी / समुद्रपारीय व्यापार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई भारत का व्यापार रोम मध्य एशिया दक्षिणी पूर्वी एशिया चीन आदि देशों से होता था।

भारत चीन व्यापार :- भारत का चीन से व्यापार मौर्य काल में भी होता था लेकिन मौर्योत्तर काल में इसमें विशेष वृद्धि हुई भारत चीन व्यापार रेशम मार्ग के द्वारा स्थल एवं जल दोनों मार्गों से होता था चीन से चीनी मिट्टी का बर्तन कच्चा रेशम आदि वस्तुएं मुख्यतः भारत व्याप्री जाती थी जबकि भारत चीन को ख़ूबी वस्त्र मसाले हाथीदात की बनी वस्तुएं औषधि आदि का निर्यात करता था

भारत दक्षिणी पूर्वी एशिया व्यापार :- भारत का दक्षिणी पूर्वी एशिया के साथ सुव्यवस्थित व्यापारिक सम्पर्क सर्वप्रथम मौर्योत्तर काल में ही प्रारम्भ हुआ संस्कृत साहित्य में स्वर्ण द्वीप (जावा सुमाना माली) के साथ भारतीय व्यापारियों के व्यापार करने की सूचना मिलती है दक्षिण पूर्वी एशिया से मसाले खनिज सुगन्धित वस्तुएं सोना चाँदी आदि भारत आती थी जबकि भारत हाथीदात की बनी वस्तुएं ख़ूबी की बनी वस्तुएं, औषधी एवं जड़ी बूटी का निर्यात करता था

भारत रोम व्यापार

भारत रोम व्यापार के साक्ष्य :- मौर्योत्तर काल में भारत रोम व्यापार के साक्ष्य काफी विविधतापूर्ण है जिसमें देशी विदेशी साहित्य तथा पुरात्व दोनों शामिल हैं विदेशी विवरणों में स्ट्रैबों का भूगोल प्लिनी का प्राकृतिक इतिहास तथा पेरीप्लस आफ इरिथ्रियन सी महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं।

स्ट्रैबो प्रतिवर्ष 102 जहाज भारत की ओर जाने की चर्चा करता है इसी प्रकार पेरीप्लस भारत रोम के बीच आयात निर्यात की वस्तुओं व्यापारिक भागों बदलावों की चर्चा करता है संगम साहित्य भी इस विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी देता है। उत्खनन से दोनों देशों के मध्य व्यापार के ऊपर महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं जैसे रोम के पोम्पई नगर उत्खनन से भारतीय वस्तुओं की प्राप्ति हुई है इसी प्रकार दक्षिण भारत में अरिकामेडु मुजरिस आर्द के खुदाई से रोमन सिक्के भूमध्य सागरीय मृदभाण्ड रोमन नावियों के साक्ष्य मिले हैं।

भारत रोम व्यापार के विकास के कारण

भौगोलिक कारण :- यूनानी नाविक हिप्पालस द्वारा 45 ईस्वी में मानसूनी हवाओं की खोज एवं व्यापार में सुगमता।

आर्थिक कारण :- भारत में गुणवत्तापूर्ण वस्तुओं का उत्पादन मौद्रिक एवं पूंजी बजार की बेहतर स्थिति से रोमन व्यापारियों को व्यापार में साहूलियत प्राप्त होना।

राजनीतिक कारण :- भारत के देशी राजाओं जैसे सातवाहन चोल चेर एवं पाण्ड्य शासक तक्षशिला के हिंदू यूनानी शक तथा कुषाण शासक तथा समकालीन रोमन सम्राटों (ओगस्टस नीरो आर्द) द्वारा व्यापार को प्रोत्साहन। स्त्रोतो से व्यापारिक दूत मंडल भेजे जाने की चर्चा मिलती है।

सामाजिक कारण :- विदेशी व्यापारियों को भारत में सामाजिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ा।

भारतीय विदेशियों का स्वागत सम्मान करते थे तथा सहायित्व प्रदान करते थे विदेशियों ने भी भारत से जूड़ाव कायम किए इससे व्यापार को बढ़ावा मिला।

भारत रोम व्यापारिक मार्ग

स्थलीय मार्ग - यह चीन के तकला मकान क्षेत्र के लोयांग चानघांग से देनहांग तक आता था यहाँ से दो मार्ग निकलते थे जिसमें एक तुसफान-काराशहर-कुचा होते होते हुए काशगर पहुँचता था दूसरा मार्ग देनहांग से छोतान होते हुए काशगर में मिल जाता था काशगर से हिंदुकुश होते हुए यह मार्ग बलख ईरान रकी होते हुए भूमध्य सागर तक चला जाता था भारत में यह मार्ग तक्षशिला काबूल से होते हुए हिंदुकुश तक जुड़ा था।

जलीय मार्ग - मुख्यतः दो थे -

जलीय मार्ग प्रथम - भड़ौच (भृगुकच्छ) बाराबरिकम्, अदन की खाड़ी अरब होते हुए भूमध्यसागर

जलीय मार्ग द्वितीय - अरब की खाड़ी, अदन तट, लालसागर होते हुए अफ्रीका एवं भूमध्य सागर -

भारत रोम आयात-निर्यात

निर्यात - रेशमी एवं सूती वस्त्र मोती माँगी हाथी दात की वस्तुएँ मसाले (विशेषतः काली मिर्च) कद्दू की खोल बंदर तोता मोर आदि

आयात - सोने एवं चाँदी की मुद्राएँ (बुलियन) ताँबा भूंगा पुष्कराज शराब भूमध्य सागरीय मृदभाण्ड इत्र सूरमा संगीत निपुण तालक रोमन बत्ताएँ आदि।

व्यापार संतुलन - भारत से रोम को विलासी वस्तुएँ अधिक मात्रा में भेजी जाती थी विशेषतः सूती महीन वस्त्र रेशमी वस्त्र तथा मसाले आदि इससे व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में था रोमन लेखक प्लिनी 5 अरब 50 करोड़ सेरेट्स भारत रोम व्यापार में घाटे की चर्चा करता है भारत का लाभ इतनी बड़ी मात्रा में होता था कि रोमन सिनेट में इस व्यापार को बंद करने की मांग उठने लगी।

रेशम मार्ग एवं व्यापार में इसकी भूमिका

रेशम मार्ग प्राचीन विश्व में वह मार्ग था जो एशिया यूरोप अफ्रीका को आपस में जोड़ता था विश्व व्यापार एवं आपसी सम्पर्क में इस मार्ग विशेष भूमिका थी।

अनेक मार्ग मिलकर रेशम मार्ग का निर्माण करते थे जो स्थल एवं जल दोनों से होकर गुजरता था भारत इस मार्ग के केंद्र में था अतः दुनिया से भारत को जोड़ने में इस मार्ग की अहम भूमिका थी।

स्थलीय रेशम मार्ग

यह प्रसिद्ध रेशम मार्ग था जो चीन के लोयांग/चेगन से निकलकर मध्य एशिया होते हुए भूमध्यसागर एवं काला सागर की तरफ चला जाता था दैनांग से पश्चिम की तरफ यह दो भागों में बँट जाता था एक मार्ग तुरफान काराशहर बुचा होते हुए काशगर पहुँचता था तो दूसरा मार्ग दैनांग से खेतान होते हुए पूनः काशगर पहुँच जाता था काशगर से हिंदुकुश होते हुए आगे बलख (बैक्ट्रिया) ईरान एवं तुर्की होते हुए भूमध्य सागर की ओर चला जाता था काशगर से एक मार्ग काबूल की तरफ आता था जो आगे तक्षशिला होते हुए भारत से जुड़ जाता था।

जलीय मार्ग

यह चीन के केंचुन कदरगाह से होकर दक्षिणी पूर्वी एशिया मलक्का जलउमरुमध्य बेंगाल की खाड़ी, मालाबार तट अरब सागर होते हुए लाल सागर एवं भूमध्य सागर की ओर चला जाता था भारत के पश्चिमी तट से मृगुकच्छ बाराबरिकम् फारस की खाड़ी अरब तट से पूना लाल सागर एवं भूमध्य सागर की ओर जुड़ जाता था।



मौर्योत्तर काल में आर्थिक समृद्धि एवं विकास के कारण

कारण - अर्थव्यवस्था एवं व्यापार के विकास के पीछे महत्वपूर्ण कारण थे निम्न थे -

राजनीतिक कारण - मौर्योत्तर कालीन शासकों में चाहे देशी ही या विदेशी शासक सभी के द्वारा व्यापार को काफी बढ़ावा दिया गया सातवाहनो ने यूनानीयों को अपने राज्य में बसने एवं व्यापार करने की अनुमति दी इसी प्रकार चेरों चोलों तथा पाण्ड्यों ने भी किया रोम के साथ व्यापार को बढ़ावा देने के लिए पाण्ड्य शासकों ने रोम के शासक भागस्तस के दरबार में एक इम्बेसल भेजा था इसी प्रकार कुषाणों द्वारा व्यापारियों को संरक्षण एवं सुरक्षा दिया गया कनिष्क ने स्थानीय रेशम मार्ग के तहद होने वाले व्यापार को विशेष रूप से संरक्षण दिया।

आर्थिक कारण -

- विभिन्न प्रकार के सिक्कों का चलना (सोना चांदी तथा शीशा)
- नृण बाजार / वितीय बाजार की स्थिति का भ्रष्ट होना (ब्याज दरों का काफी कम होना) (9-12%)
- भारतीय शिल्पीयों द्वारा विभिन्न शहरों में गुणवत्ता पूर्वक वस्तुओं (सूती एवं रेशमी वस्त्र, हाथी दात की वस्तुएं काष्ठ की वस्तुएं हिरा मोती जवाहरात आदि) का उत्पादन

- व्यापारिक मार्गों की सक्रियता भारत के भीतर उत्तर एवं दक्षिण पथ तथा रेशम मार्ग

सामाजिक कारण - इसकाल में भारतीय समाज एक शान्तिपूर्ण समाज का उदाहरण पेश करता है विदेशियों के कलश्व भारत में आगमन का विरोध नहीं किया गया बल्कि उनके साथ सहयोग दिखलाते हुए उनके साथजुगव कायम किया इस काल में सामाजिक धार्मिक नियमों में लचीलापन लाया गया इससे आपसी सहयोग एवं सौहार्द को बढ़ावा मिला जिससे शान्ति कायम हुई फलतः व्यापार वाणिज्य के विकास को काफी बढ़ावा मिला।

भौगोलिक कारण -

- हिन्द महासागर में भारत के मध्य में अवस्थिति का होना
- मानसूनी हवाओं की खोज

“प्रभाव”

आर्थिक प्रभाव - नगरीकरण में बृद्धि

- सामान्य जनता का वित्तीय सामावेशन होना
- भुगतान संतुलन का अनुकूल होना एवं आर्थिक समृद्धि

तकनीकी पर प्रभाव - सिक्को को आस्त करने के बजाय ढालकर बनाने की तकनीकी का विकास हुआ लौह उद्योग में श्रेष्ठ तकनीकी भारी पैरिक्लस में भारत में ^{अप्रोकाश} नियति में होने वाले जोड़े के ऐसी तलवारों की चर्चा है जिस पर जंग नहीं लगता था इस काल में पर्वत पहाड़ी को काटकर चैन्य एवं बिहारों के निर्माण की तकनीकी का काफी बेहतर विस्तार हुआ

सामाजिक प्रभाव - शुद्ध एवं वैश्यों की सामाजिक स्थिति एवं जीवन स्तर में बृद्धि हुई व्यापार के विकास के

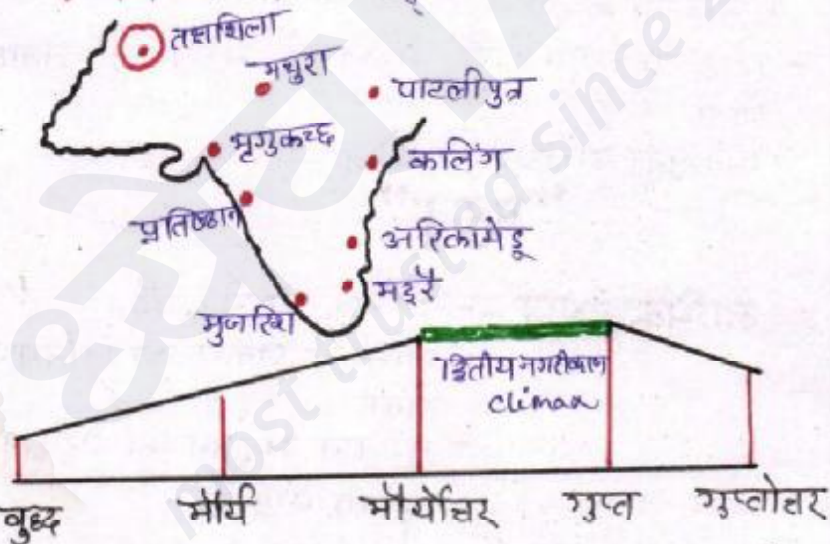
वाणिज्य द्वारा अधिक लाभ प्राप्त हुआ भारत की समृद्धि से प्रभावित होकर अनेक विदेशी भारत आये तथा यहाँ के समाज के साथ जुड़कर हमेशा के लिए भारतीय हो गये।

सांस्कृतिक प्रभाव - कला स्थापत्य चित्रकला नृत्य संगीत आदि का भव्य विकास हुआ।

मौर्योत्तर काल एवं नगरीकरण

द्वितीय नगरीकरण का चर्मोत्कर्ष है
(600 BC 500 AD)

- पुराने शहरों का विस्तार
- नये नगरों का उद्भव



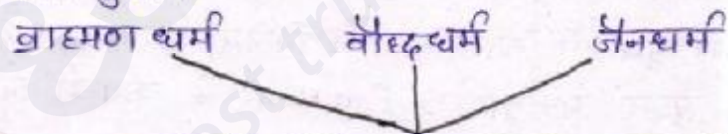
मौर्योत्तर कालीन नगरीकरण की विशेषताएँ

- पुराने नगरों का विस्तार तथा नये नगरों के उद्भव
- इस काल में नये उभरने वाले निम्न थे - पेशावर स्थलकोट (पेशावर), पुण्डरीकपुर एवं चन्द्रकेतुगढ़ (पंजाब), शिशुपालगढ़ (उड़ीसा), प्रतिष्ठा (महाराष्ट्र), अमरावती एवं नागार्जुनकोण्डा (आंध्र प्रदेश), कावेरी पत्तनम एवं अरिकामेडू (तमिलनाडू), मुजिरिस एवं वणजी (करल), मद्रुरै एवं कोरक (तमिलनाडू)
- इस काल में पुराने नगरों जैसे तक्षशिला, मथुरा, कलिंग, उज्जैन आदि का और विस्तार हुआ

- इसकाल के नगरी के भवन निर्माण योजना में बदलाव आया इसकाल के अनेक नगर दृष्ट्यावासीयों की भौतिक संतर्जनुमा। सीड योजना प्रणाली के आधार पर बनाया गया।
- तक्षशिला के सिरकप एवं सिरमुख टिलो के आधार पर टिलो के उत्खनन से योजना के आधार पर निर्मित नगरीकरण के साक्ष्य मिले हैं।
- नगरीकरण की तकनीकी में भी परिवर्तन हुआ चूना एवं सुरभी का इस्तेमाल किया गया इसे कुषाण मध्य एशिया से आये थे इसी प्रकार भवनों में रंगीन टाइल्स का भी प्रयोग किया गया।

मौर्योत्तरकालीन धर्म

धर्म एवं दर्शन (विचार) में भी इस काल में अनेक परिवर्तन हुए बंगमग सभी स्थापित धर्मों में पुरानी मान्यताओं एवं विचारों में संशोधन एवं नये की स्थापना हुयी।



सभी में संशोधन, परिवर्तन, परिमार्जन

ब्राह्मण धर्म- इसकी सन अतादियों में ब्राह्मण

धर्म में उदार मूल्यों की स्थापना हुई तथा इसने नयी विशेषताएँ उभरी जो पूर्व में नहीं थी जैसे -

- 1- ब्राह्मण धर्म में भी महायान भाव की भौतिक भाव की उद्भव हुआ जिसके तहत माना गया कि ईश्वर की सर्वोच्च कृपा एवं मुक्ति के लिए यज्ञ पशुबलि एवं कर्मकाण्ड आवश्यक नहीं है बल्कि ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण / आत्मनिवेदन से ईश्वर की कृपा प्राप्त की जा सकती है।

हालांकि ब्राह्मण धर्म में अभी यज्ञ कर्मकाण्ड बने रहे लेकिन भाक्ती का विचार अधिक लोकप्रिय बनकर उभरा।

- ब्राह्मण धर्म में देवी देवताओं की मूर्ति की पूजा पहली बार प्रारम्भ हुआ देवी देवताओं को शिल्पीयों द्वारा प्रतिमाओं में उतारा गया जिसमें शिव कातिक्रिय विष्णु पार्वती दुर्गा आदि मुख्य थे।

- ब्राह्मण धर्म में विष्णु की पूजा विशेष रूप से लोकप्रिय बनी इसकाल में देश के विभिन्न भागों में विष्णु के अनुयायियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई इन अनुयायियों को वैष्णव वैष्णव एवं भागवत कहा गया श्रुतों के देवता नारायण तथा वैदिक देवता विष्णु दोनों का ब्राह्मण धर्म में एकीकरण कर दिया गया इससे विष्णु के पूजा के लोकप्रियता को काफी बढ़ावा मिला यहाँ तक विदेशियों ने भी इसे बड़े पैमाने पर अपनाया जिसकी सूचना हेलेयोडोरस के विदेशालेख तथा कुषाणों के लेखों से मिलती है मथुरा क्षेत्र में विष्णु के पुजा पंचवर्ष (Five Years) के रूप में लोकप्रिय हुई।

- ब्राह्मण धर्म में इसीकाल से तीर्थ एवं उपवास को धर्म का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाने लगा मूर्ति पूजा के साथ साथ लिंगपूजा जानवरों की पूजा वृक्षापूजा नागपूजा आदि प्रचलित हुआ

ब्राह्मण धर्म में श्रुतों एवं महिलाओं को अधिकार प्रदान दिये गये उहे भी देवी देवताओं के पौराणिक कथाओं को सुनने का अधिकार दिया गया

- ईर्ष्या सन अतादि

बौद्ध धर्म

ईसवी सन आतादियों में बौद्ध धर्म में भी अनेकानेक परिवर्तन हुए बुद्ध के अनुयायियों द्वारा इस काल में उनकी मूल शिक्षाओं में अनेक परिवर्तन लाया गया इस काल के बौद्ध धर्म की मुख्यविशेषता निम्न है।

- महायान भावों का उद्भव एवं बुद्ध को ईश्वर का दर्जा दिया जाना एवं बुद्ध की मूर्ति पूजा का प्रारम्भ
- बोधिसत्व की संकल्पना का उद्भव
- बौद्ध दर्शन में शून्यवाद एवं विज्ञानवाद जैसे सिद्धान्तों की स्थापना
- बौद्ध धर्म का हिनयान एवं महायान में विभाजन

हिनयान एवं महायान में अन्तर

कनिष्क के संरक्षण में कश्मीर के कुण्डूर में चौथी बौद्ध संगीति हुई जिसमें बौद्ध धर्म का हिनयान एवं महायान नामक दो साम्प्रदायों में विभाजन हो गया दोनों समुदायों के अनुयायी बुद्ध एवं बौद्ध धर्म में आस्था रखते थे लेकिन दोनों के सिद्धान्तों एवं तरीकों में एक दूसरे से अनेक अन्तर था

हिनयान

- 1- इसमें बुद्ध को ईश्वर मान कर केवल महापुरुष के रूप में माना गया है।
- 2- इसमें बुद्ध को मूर्ति के द्वारा नहीं बल्कि विविध प्रतीकों जैसे हाथी और कमल पुष्प घोड़ा चक्र स्वरूप आदि के रूप द्वारा याद करने के तरीके को अपनाया गया

महायान

- 1- इसमें बुद्ध को ईश्वर का दर्जा दिया गया है।
- 2- इसके तहत बुद्ध को ईश्वर मानते हुए गांधार मथुरा अमरावती जैसे स्थानों पर विविध मुद्राओं में उनकी प्रतिमाएं बनाई गई तथा बुद्ध की पूजा के लिए कई नियम एवं तरीके का गढ़ा गया



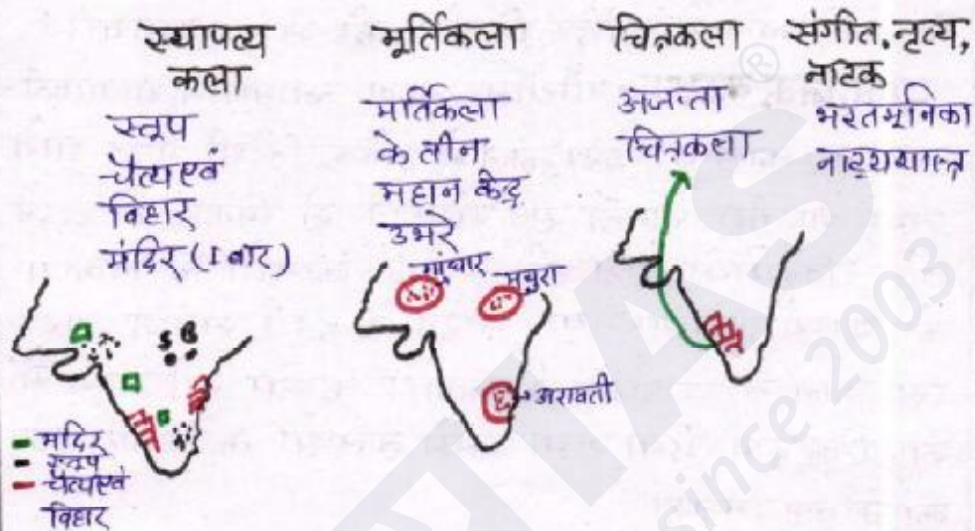
- 3- इसमें व्यक्तिगत मुक्ति पर जोर दिया गया है जिसे अरहन्त कहा गया इसमें सामूहिक हित पर व्यक्ति हित को महत्व दिया गया
- 3- इसमें सामूहिक हित को प्रमुख स्थान दिया गया जिसके लिए बौद्धिकता के आदर्श को प्रमुखता दी गई
- 4- इसमें बुद्ध के किसी भी पुर्नजन्म को स्वीकार नहीं किया गया
- 4- इसमें माना गया कि बुद्ध का पुर्नजन्म होगा क्योंकि संसार में अभी कष्ट है फलतः भविष्य के बुद्ध की संकल्पना दी गई।
- 5- इसमें प्रचार का माध्यम पाली भाषा को ही बनाया गया
- 5- इसमें पाली के अपेक्षा संस्कृत को अधिक महत्व दिया गया
- 6- इसमें सर्वास्तिवादिन स्थिरवादिन आदि अनेक उपसंप्रदायों का विकास हुआ
- 6- इसमें माध्यमिक श्रमवाद यौगाचार विज्ञानवाद तथा बाद में वज्रयान एवं काल चक्रयान जैसे महत्वपूर्ण सम्प्रदाय उभरे
- 7- इसका प्रसार मुख्यतः श्रीलंका बर्मा तथा दक्षिणी पूर्वी एशिया भाई देशों में हुआ
- 8- इसका व्यापक प्रसार हुआ जो मध्य एशिया तिब्बत चीन जापान कोरिया आदि देशों में दिखाई देता है।

जैन धर्म

ब्राह्मण एवं बौद्ध धर्म की भाँति जैन धर्म में भी सिद्धान्तों का एवं आदर्शों में अनेक नवीन परिवर्तन हुए जैन धर्म में के भी तीर्थंकरों की पूजा प्रारम्भ हुई जैनियों ने अपने तीर्थंकरों को ईश्वर से भी ऊँचा दर्जा देते हुए उन्हें सर्वोच्च माना जैसे जैन धर्म में मानव सेवा के भाव का उदय हुए फलतः कई जैन सेवा दल उभरे इसकाल में कलिंग मथुरा मैसूर आदि जैन धर्म के महान केन्द्र थे।

मौर्योत्तर कालीन कला एवं स्थापत्य

मौर्योत्तर काल में कला में अनेक नवीन रूपों शैलियों नवीन संरचनाओं का भव्य विकास हुआ।



मौर्योत्तरकाल में विविध कला शैलियों एवं रूपों के भव्य विकास के लिए जाना जाता है इस काल में अधिल भारतीय स्तर पर स्थापत्य के विविध रूपों (स्तूप चैत्य विहार मंदिर आदि) विविध प्रकार के मूर्तियों चित्रकला संगीत नृत्य नाटक आदि कलाओं का भव्य विकास हुआ

कलाओं के विकास का कारण

आर्थिक कारण - मौर्योत्तर काल में कृषि व्यापार वाणिज्य नगरिकरण आदि में अश्रुतपूर्ण प्रगति हुई इससे किसानों शिल्पीयों उत्पादकों व्यापारियों आदि को काफी आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ इस लाभ का निवेश विभिन्न कलाकृतियों के निर्माण में किया गया जिससे कलाओं के विकास को बल मिला।

धार्मिक कारण - मौर्योत्तर काल में धर्म दर्शन के क्षेत्र में भान्ति नामक नयी विचारधारा का उद्भव हुआ जिसके तहत माना गया कि ईश्वर की कृपा एवं मोक्ष के लिए

हृदय से पूर्ण समर्थन खिलाने हुए इसे प्राप्ति किया जा सकता है। भावों के लिए देवी देवताओं की प्रतिमा निर्माण की जरूरत महसूस की गयी इससे मूर्ति निर्माण को बल मिला पुनः देवताओं के लिए भाष्य की आवश्यकता नै इसी काल में मंदिर निर्माण को संभव बनाया।

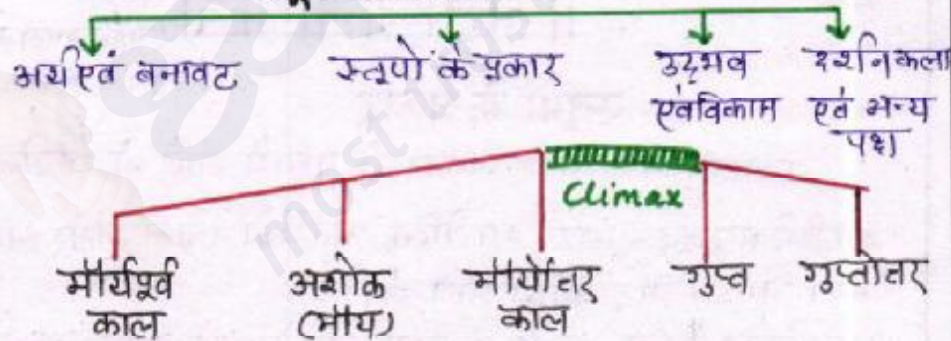
सामाजिक कारण - मौर्योत्तर काल सामाजिक आत्मसातीकरण का काल था इस काल में अनेक विदेशी भारत आये तथा भारतीय समाज एवं संस्कृति से निकट से जुड़ने लगे विदेशियों द्वारा भी अनेक कलाओं के विकास को सहयोग दिया गया भारत के देशी समाज द्वारा इस काल में कलाओं के विकास के लिए बड़ी मात्रा में सामूहिक दान दिया गया इससे कलाओं के विकास को काफी बल मिला।

राजनीतिक कारण - कलाओं के विकास में शासकों ने भी योगदान दिया देशी एवं विदेशी सभी शासकों ने कलाओं को अपना संरक्षण एवं सहयोग दिया इसी प्रकार गांधार तथा मथुरा कला को यूनानियों एवं तुषाणों ने संरक्षण दिया इसी प्रकार सौची एवं भरहुत के स्तूपों के विकास में शुंगों ने काफी सहयोग दिया उड़ीसा के इंदरगिरी एवं खण्डगिरी के पहाड़ियों पर प्यारवेल द्वारा 35 गुफाओं का निर्माण करवायी गयी पश्चिमी घाट के पहाड़ियों में सातवाहनों के संरक्षण में भाजा, जुन्नार, नाशिक कार्ले तथा अजन्ता भाई की पहाड़ियों में अनेक चैत्य एवं विहार बनवाये गये तथा चित्रकारी की गई।

स्थापत्य कला

मौर्योत्तर काल में स्तूपों का भव्य विकास हुआ शुंगों के संरक्षण में साँची एवं भरहुत के पुराने स्तूपों को और विस्तार दिया गया जबकि सम्रावती नागार्जुनकोण्डा मोहनजोदड़ों पेशावर आदि में अनेक नये स्तूप बनाये गये स्तूपों विभिन्न अंग प्रत्यंगों जैसे तोरण द्वारों एवं वेदिकाओं पर हीमशानी तथा महायानी परम्परा में अनेक कलात्मक शिल्प भी बनाये गये साथ ही आम लोगों के जीवन से संबंधित विभिन्न विषयों जैसे यक्ष यक्षिणी प्रतिमाएँ, नाग गन्धर्व, अप्सरा, पुष्प बत्ता, वल्हारि आदि के शिल्प तथा जातक कहानियों के शिल्प भी बनाये गये हैं इस प्रकार इस काल में वने स्तूपों के स्थापत्य एवं शिल्प कला का अद्भुत उदाहरण है।

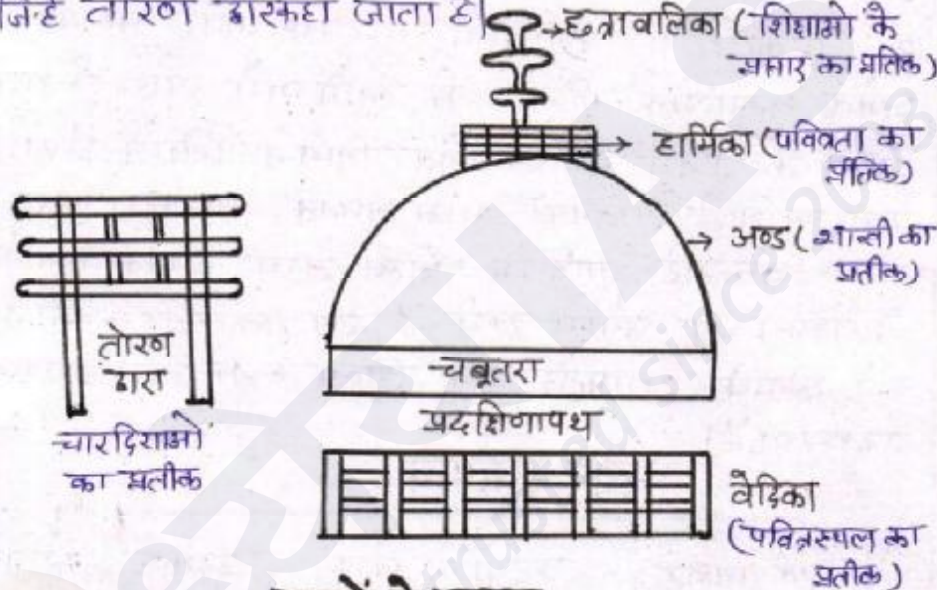
स्तूप स्थापत्य



स्तूप का आध्यात्मिक अर्थ धूप, धूँहा या ढेर होता है स्तूप समाधि का प्रतिक स्थापत्य संरचना होते हैं जो किसी सन्त या आचार्य के मृत्यु के स्मृति में बनाये जाते थे

स्तूप विभिन्न अंग प्रत्यंगों से मिलकर बना एक स्थापत्य है इसका मुख्य भाग भण्ड कहलाता है जो उल्टे कटोरे की भाँती या अर्द्धगोलाकार संरचना होती है।

अण्ड के ऊपर आड़े तीरहरे पत्थरों की एक संरचना होती है जिसे हमिका कहा जाता है स्तूपों के चारो तरफ आड़े तीरहरे पत्थरों का एक घेरा बना होता है जिसे वेदिका कहा जाता है। वेदिका तथा अण्ड के बीच में ज्वाली स्थान का प्रयोग प्रदक्षिणापथ के रूप में किया जाता है चारों दिशाओं में चार प्रवेश द्वार बने होते हैं जिन्हें तोरण कहा जाता है।



स्तूपों के प्रकार

स्तूप मुख्यतः चार प्रकार के बनाये जाते थे जैसे

शारीरिक स्तूप - यह शारीरिक अवशेषों (पूरा शरीर, नाखून बाल आदि) पर बनाये जाते थे।

परिभोगिक स्तूप - बुद्ध के द्वारा उपभोग की गयी वस्तुओं पर बना स्तूप।

उद्देशिका स्तूप - बौद्ध धर्म के प्रचार के उद्देश्य से बना

पूजार्थिक स्तूप - बुद्ध की पूजा के उद्देश्य से बना स्तूप

स्तूपों का उद्भव एवं विकास

स्तूप की प्रथम चर्चा ऋग्वेद में आयी है जहाँ ऊँची उठी हुयी तीन भगिन्वान्तीयों (सूर्य की राशियाँ, अग्नि के लपटे, वितान लेकर फैला बुद्ध) को स्तूप कहा गया है

महापरिनिर्वाणसूत से जानकारी प्राप्त होती है कि बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों द्वारा आठ स्थानों पर स्तूप बनवाये गये जिसे अठ्ठमहास्थानी कहा जाता है यह प्रारम्भिक स्तूप थे जो काफी साधारण थे केवल मिट्टी के टेर के रूप में बने थे वर्तमान में यह नष्ट प्राय हो चुके हैं।

मौर्यकाल में काफी बड़ी संख्या में स्तूप बनवाये गये वैदिक परम्परा के अनुसार अशोक ने 84000 स्तूपों का निर्माण करवाया था साँची भरहुत धर्मराजिका (क्षेत्रशिला) चौखण्डी आदि महत्वपूर्ण स्तूप अशोक ने ही बनवाये थे अशोक के समय स्तूपों पर ईंट बिछाई गई लेकिन अभी भी इनका भव्य विकास नहीं हुआ था।

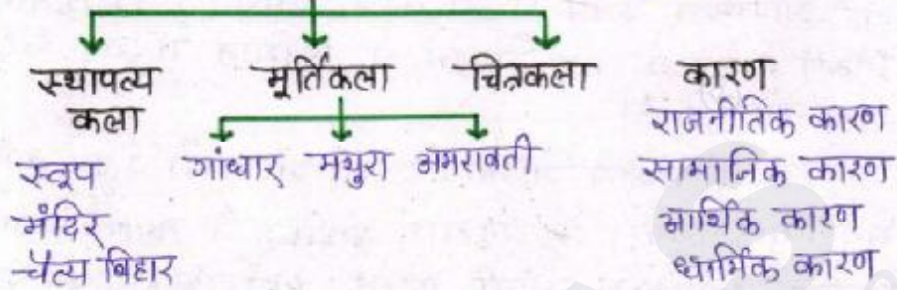
मौर्योत्तर काल में विशाल भव्य तथा कलात्मक अत्यन्त सुवस्त्र स्तूपों का निर्माण किया गया इसके पूर्व तथा इसके बाद इतने वेदिक स्तूप नहीं बने इस काल में गुप्तों के संरक्षण साँची एवं भरहुत के स्तूपों को और बड़ा बनाया गया तथा उनके तोरण डारो एवं वेदिकाओं पर हीनयानी परम्परा जातक कथाओं का आभूषण एवं लोकजीवन के विषयों आदि के अत्यन्त सातवाहनो के संरक्षण में अमरावती नागार्जुनकोण्डा धण्डशाला में तथा कुषाणा के संरक्षण में पेशावर तथाशिला मोहनजोदड़ो आदि स्थानों पर भी अनेक स्तूपों का निर्माण हुआ।

गुप्त गुप्तोत्तर काल में भी स्तूप निर्माण की परम्परा जारी रही लेकिन इसकी कलात्मकता में गिरावट आने लगी गुप्त काल में धर्मेय स्तूप (सारनाथ) बनाये गये पूर्वमध्यकाल में स्तूपों का निर्माण नहीं हुआ अतः धीरे धीरे यह कला परम्परा कमजोर होगयी।

मंदिर

“मौर्योत्तर कालीन कला”

कला के अनेक रूपों / शैलियों का अद्भुत विकास



मंदिरों की नींव भारत में पहली बार मौर्योत्तर काल में ही रखी गयी इसकाल के वने मंदिर घास घूस वाँस वल्ली तथा कच्ची ईंटों के प्रयोग से बनाए गये थे प्रारम्भिक मंदिर होने के कारण ये काफी साधारण प्रकार के मंदिर थे इसकाल के प्रमुख मंदिर निम्न हैं।

- 1- तक्षशिला का झंडियाल मंदिर
- 2- नागार्जुनकोण्डा का मंदिर (आन्ध्रप्रदेश)
- 3- नागरी मंदिर (राजस्थान)
- 4- बेसर नगर का मंदिर (विदिशा M.P.)

ये सभी
ईंटों से
निर्मित

चैत्य एवं विहार

पूजा के लिए
बनी संरचना

निवास स्थान
(भिक्षु मिश्रणी)

चैत्य का शाब्दिक अर्थ - **चिता** चैत्य मृत्यु का प्रतीक समाधि युक्त संरचना होती थी जिनकी पूजा की जाती थी इस रूप

चैत्य दो प्रकार के बनते थे -

संरचनात्मक
चैत्य

शील्यकृत चैत्य
(Rock Cut)

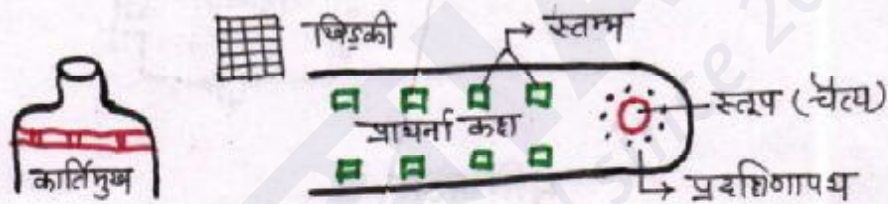
संरचनात्मक चैत्य

खुले में घास फूस वास बल्ली
आदि से औपड़ीनुमा की आकृति
जो समाधि की ऊपर बनायी
जाती थी

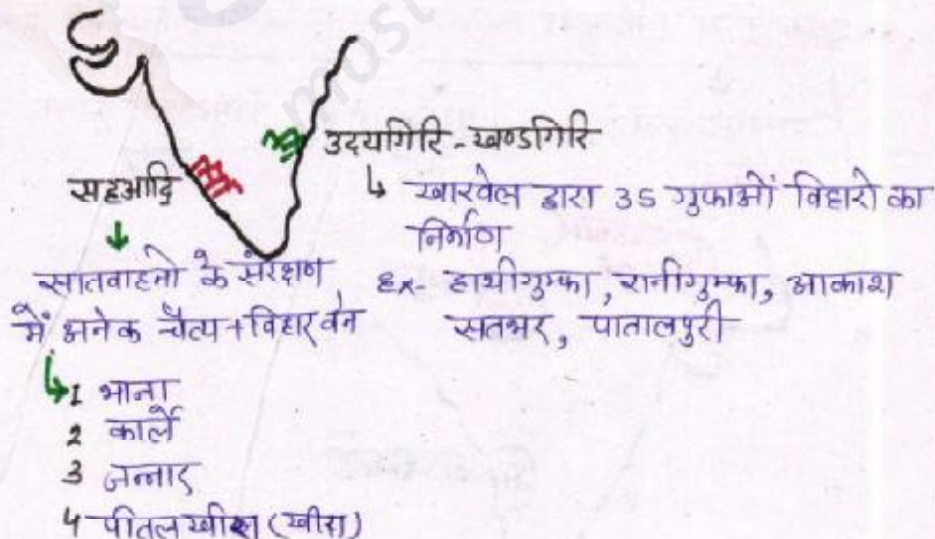


शैल्युक्त चैत्य

पहाड़ी की सामने की तरफ
से काटकर बनाया जाता था
जिसमें अन्तिम सीरा मर्द
बुताकार / गज पृष्ठकार
होता था किनारे पर स्तूप
बना होता था प्रवेश द्वार
कीर्तिमुख व खिड़की बनी
होती थी।



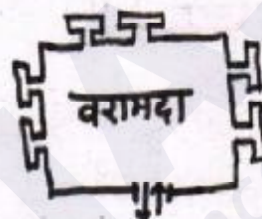
मौर्योत्तर काल में पश्चिमी तट पर अनेक चैत्य
एवं विहार तथा पूर्वी तट पर अनेक विहारों का
निर्माण हुआ।



विहार (संघाराम)

भिक्षु भिक्षुणियों के रहने का स्थान
यह भी दो प्रकार के होते थे

संरचनात्मक विहार	अल्पकृत विहार
मुख्य धरातल पर घास फूस वाला बल्ली से स्तूपों का निर्माण	पहाड़ी की काटकर निर्माण जिसमें एक मुख्य भस्म बरामदा तथा कई कमरे बने होते थे।



मूर्तिकला

- मौर्योत्तर काल में देशभर में भारी संख्या में धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष अदभुत प्रतिमाओं का निर्माण हुआ
- इतिहास में पहली बार देवी देवताओं का प्रतिमा निर्माण
- इसकाल में मूर्तिकला के तीन महान केंद्रों का उद्भव हुआ

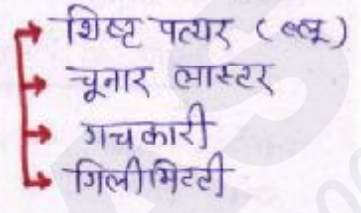
गान्धार कला केंद्र	मथुरा कला केंद्र	अमरावती कला केंद्र
-----------------------	---------------------	-----------------------



गांधार कला

मुख्य स्थल :-

- गांधार
- तक्षशिला
- बामियान
- पैशावर
- ब्राह्मजी की ढेरी
- स्वातखाली
- चरसड़का
- मन्थोर

- ① यहाँ की मूर्तियों के निर्माण में अनेक सामग्रियों का प्रयोग किया गया है & 
- शिशु पत्थर (Shishu)
 - चूना लस्टर
 - गचकारी
 - गिलीमिटली

② विषय + विशेषता

विदेशी → अपोलो + हेलेना
देवी → धर्म निरपेक्ष मूर्तियाँ
यक्ष यक्षिणी कुवेर हरीति
सामान्य स्त्री पुरुष
→ धार्मिक मूर्तियाँ
केवल बुद्ध एवं बौद्धिसत्व

विदेशी प्रभाव से बनी है (यूनानी + रोमन + मध्य एशिया)

यूनानी लक्षण { दाढ़ी + पूढ़ बना है।
पैरों में सँडल है।
बाल झुंघराले हैं।
वस्त्र लटके हुए हैं।
आभूषण से लदे हैं।
सादा प्रभामण्डल }

रोमन लक्षण

“मथुरा कला”

- ↳ मथुरा केशवपुर नमालपुर कटरा और कंकालीटिला आदि स्थानों पर विकसित
- ↳ मुख्यतः बाल बलुभा पत्थर का प्रयोग प्रतिमा निर्माण के लिए किया गया है

विषय + विशेषता

शास्त्र की अपेक्षा काफी विविधताएँ

- | | |
|---|--|
| <p>धार्मिक विषय
(सभी धर्म)</p> <p>① हिन्दू धर्म → शिव
कार्तिकेय
दुर्गा पार्वती
सप्तमातृकायै</p> <p>② जैन धर्म → तीर्थंकरों की मूर्तियाँ
स्वतंत्र + आयागपट्ट
दोनों रूपों में बनी हैं { आदिनाथ
पार्श्वनाथ
महावीर स्वामी</p> <p>③ बौद्ध धर्म → स्वदेशी प्रभाव से बनी आध्यात्मिक भाव का
मूर्तियों में विशेष आरोपण</p> | <p>धर्म निरपेक्ष विषय</p> <ul style="list-style-type: none"> - यक्ष यक्षिणी कुबेर हरीति की प्रतिमा - सामान्य स्त्री पुरुष की प्रतिमा |
|---|--|
- Ex → बुद्ध मूर्तियों में दाढ़ी एवं मूँह नहीं बनी है।
 • पैरों में कोई जुता चप्पल नहीं दिखाया गया है।
 • योगी के भाँठे जरा बना है।
 • कसर कसे हुए दिखते हैं
 → लम्बा कान. खुबसूरत वदन
 भेलंकृत एवं प्रभामण्डल (द्वितीय)

“अमरावती कला”

इसका विकास कृष्णा खाड़ी में अमरावती नागाखुनि कौन्डा
गौली दृष्टशाला आदि केंद्रों पर हुआ।

मुख्यतः बलुआ पत्थर एवं संगमरमर का प्रयोग यहाँ
प्रतिमा निर्माण में किया गया है।

विषय + विशेषता

- धार्मिक - मुख्यतः बुद्ध एवं बौद्धिस्तव की
प्रतिमाएँ बनी हैं।
- धर्म निरपेक्ष - सामान्य स्त्रीपुरुष, राजा,
राजकुमारी-महलों के दृश्य
- धार्मिक की अपेक्षा यहाँ
की गैर धार्मिक प्रतियों
ज्यादा अच्छी बनी हैं।

चित्रकला (Ajanta)

- औरंगाबाद कुल 29 गुफाएँ हैं जो सैकड़ों वर्षों
में बनी हैं।
- सातवाहन
- बाकाटक (गुप्त)
- पश्चिमी-चालुक्य
- कलाओं का संगम
 - चैत्य विहार
 - मूर्तियाँ
 - चित्रकारीयाँ

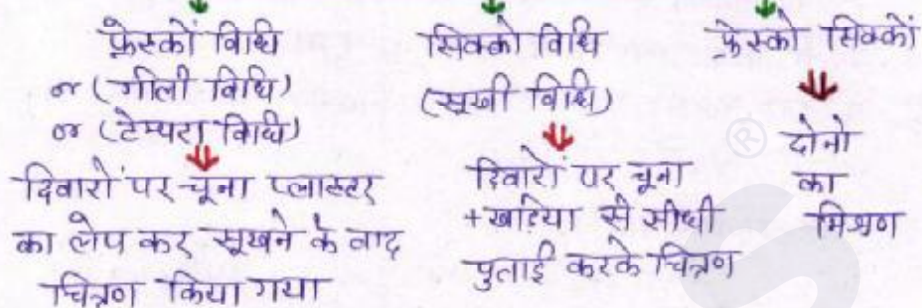
अनन्ता चित्रकला सैकड़ों वर्षों में चित्रकारी की गयी

विषय - विशेषता

- धार्मिक (केवल बौद्ध धर्म)
- गैर धार्मिक
- दीनयान परम्परा के चित्र
- महायानी परम्परा के चित्र
- जातक कहानियों के चित्र
- ① प्राकृतिक तरीकों के रंगों का निर्माण
 - वनस्पति
 - खनिज
- ② लाल, गेरुआ, हरा, काला, पीला, सफेद
- ③ चित्रों में भाव-संवेदना सौन्दर्य का अद्भुत प्रयोग

“ भज्जता चित्रकला की तकनीकी ”

मुख्यतः तीन तरीकों द्वारा चित्र बनाए गये हैं।

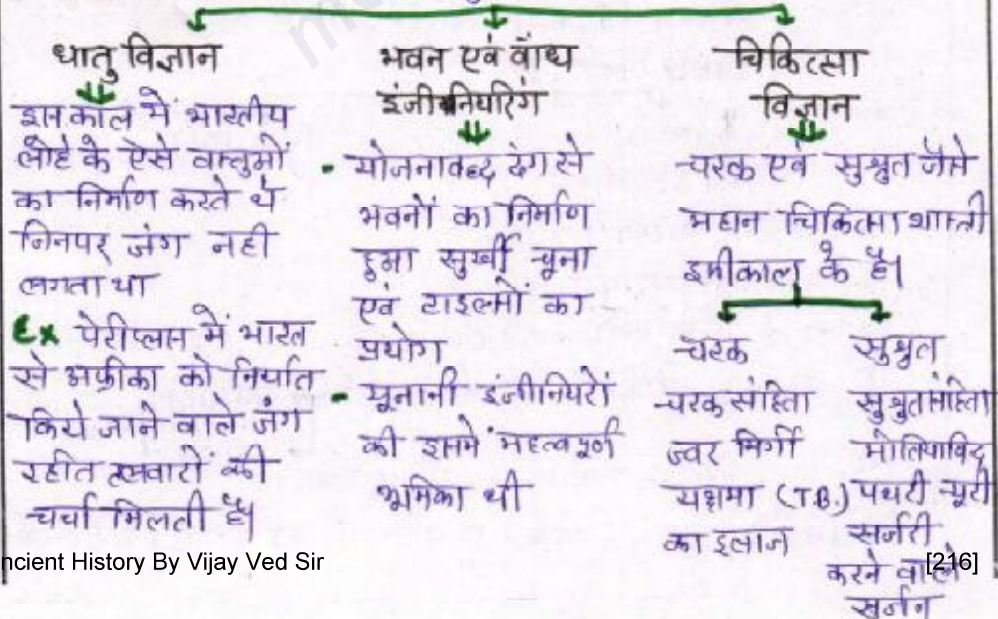


“ प्रदर्शनकारी कलाएं संगीत नृत्य नाटक ”

इसकाल में संगीत नृत्य एवं नाट्य कला भी काफी समृद्ध थी भरतमुनी इसी काल से संबंधित हैं जिन्होंने नाट्य शास्त्र शास्त्र नामक ग्रन्थ की रचना की जिन्होंने अपनी पुस्तक में नृत्य संगीत तथा नाटक संबंधित अनेक नियमों एवं मानकों का उल्लेख किया है शास्त्रीय कलाओं में आज भी भरतमुनी के निर्देशों का कलाकार पालन करते हैं।

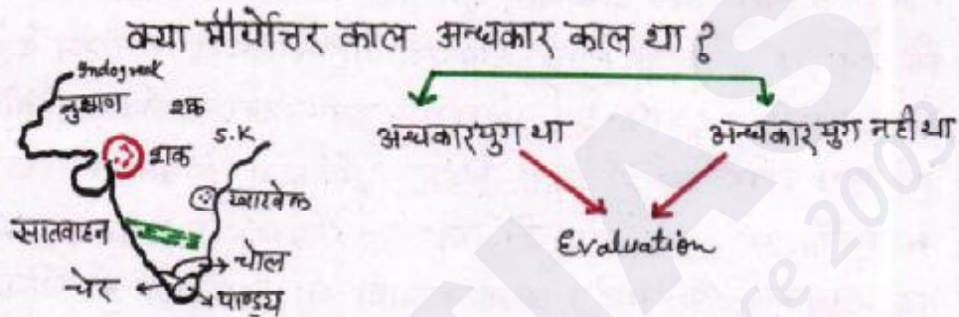
“ मौर्योत्तर काल में विज्ञान एवं औद्योगिकी ”

मौर्योत्तर काल में विज्ञान एवं औद्योगिकी के क्षेत्र में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण विकास हुआ।



“जगोलशास्त्र”

इसकाल में ज्योतिष तथा नक्षत्र विद्या में भी काफी प्रगति हुई यूनानीयों के आने से भारत में रोमन तथा पॉलिश सिद्धान्त जैसे सिद्धान्तों का आगमन हुआ नक्षत्रों को देखकर भविष्य बताने की कला भारत में यूनान से ही आयी इसे होराशास्त्र कहा गया है।



मौर्योत्तर काल को अन्यकार युग के रूप में परिभाषित करना कहां तक न्यायोचित है आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

आधुनिक इतिहास लेखन के तहत मौर्योत्तर काल को अनेक विद्वानों ने अन्यकार युग के रूप में घोषित किया है जबकि विद्वानों का एक दूसरा वर्ग इस पर आपत्ति करता तथा इसे अन्यकार युग नहीं मानता है अतः यह विवेचन का मुद्दा है।

इतिहासकारों का एक वर्ग मौर्योत्तर काल को अन्यकार युग के रूप में देखता है इनका तर्क है कि मौर्योत्तर काल राजनीतिक अस्थिरता एवं अशान्ति का काल था इस काल में भारत पर विदेशियों के आक्रमण हुए जिसमें संघर्ष तथा युद्ध को बल मिला इसकाल में किसी ऐसी राजनीतिक शक्ति का उदय नहीं हुआ जो समस्त भारत को एक सूत्र में पिरो सके तथा एकजुट कर सके साहित्य एवं विज्ञान के क्षेत्र में गूप्ती जैसा कोई विकास नहीं हुआ इसकाल में समाज का भी अन्तरविरोधों एवं

विदेशियों के आने से सामाजिक संकट उत्पन्न हुआ जिसे मनु जैसे लेखकों ने कलियुग का संकट नाम दिया है अतः इस युग को अन्धकार युग कहा जाना चाहिए।

विद्वानों का एक दूसरा वर्ग भौगोलिक काल को अन्धकार काल के रूप में निश्चित करने पर कहीं आपत्ति दर्ज करता है तथा इसे अन्धकार युग नहीं मानता है इनका तर्क है कि यह वह काल था जब कृषि व्यापार वाणिज्य उत्पादन कुँडों तथा नगरों का अभूतपूर्व विकास हुआ कला के विविध शैलियों एवं रूप रंगों (स्वप, चैत्य, विहार, भूर्तिकला, चित्रकला) का भव्य विकास हुआ धातु विज्ञान एवं चिकित्सा विज्ञान (चरक एवं सुश्रुत की उपस्थिति) अत्यन्त उमड़ा था इस काल में नीचले वर्ग के लोगों अर्थात् शूद्रों एवं व्यापारियों के जीवन में उत्थान हुआ विदेशियों के भारत भागमन से भारत की सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था दिन बिन नहीं हुई क्योंकि उन्होंने भारत को अपना घर बना लिया वे यहाँ के समान एवं धर्म का स्थायी हिस्सा बने उनका भारतीयकरण हो गया अतः इस युग को अन्धकार युग कहना युक्तीसंगत नहीं है।

विभिन्न मतों का परीक्षण करने तथा साक्ष्यों के जाँच के बाद कहा जा सकता है कि इस युग को अन्धकार युग कहना उचित नहीं है अन्धकार युग अपने आप में एक भूगोलिक संकल्पना है जिसे किसी भी पिछले युग पर लागू कर उसे परिभाषित नहीं किया जा सकता है भौगोलिक काल में हुए सामाजिक एवं आर्थिक सांस्कृतिक विकास के परिपेक्ष्य में इस काल को अन्धकार युग कहना उचित न्यायोचित नहीं है बल्कि इस काल को परिवर्तन एवं विकास के युग के रूप में देखा जाना चाहिए।

क्योंकि इस समय अनेक पुरानी विशेषताएँ निरंतर बनी
रही सांस्कृतिक एवं समाज में तबीन परिवर्तन भी हुए
इस समय कुछ ऐसे सांस्कृतिक प्रतिमानों की स्थापना हुई
जो वर्तमान में भी हमारे सांस्कृति में बने हुए हैं।

Dhyeya IAS Now on Telegram



We're Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from the link given below

"https://t.me/dhyeya_ias_study_material"

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter

(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्सक्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारे ईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें** अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से **Subscribe** करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

Join Dhyeya IAS Whatsapp Group by Sending "Hi Dhyeya IAS" Message on 9205336039.

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter

Step by Step guidance for Subscription:

- **1st Step:** Fill Your Email address in form below. you will get a confirmation email within 2 min.
- **2nd Step:** Verify your email by clicking on the link in the email. (Check Inbox and Spam folders)
- **3rd Step:** Done! you will receive alerts & Daily Free Study Material regularly on your email.

Subscribe

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर Dhyeya IAS Now on Whatsapp

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर
मुफ्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध है

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने
के लिए 9355174441 पर **"Hi Dhyeya IAS"**
लिख कर मैसेज करें

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड़ सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in



नोट: अगर आपने हमारा Whatsapp नंबर अपने Contact List में Save नहीं किया तो आपको प्रीतिदिन के मैटेरियल की लिंक प्राप्त नहीं होगी इसलिए नंबर को Save जरूर करें।

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ने के लिए **9355174441** पर **"Hi Dhyeya IAS"** लिख कर मैसेज करें

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड़ सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in



Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400